

सलोकु ॥

दीन दरद दुख भंजना  
घटि घटि नाथ अनाथ ॥  
सरणि तुम्हारी आइओ  
नानक के प्रभ साथ ॥१॥

असटपदी ॥

जह मात पिता सुत मीत न भाई ॥  
मन ऊहा नामु तेरै संगि सहाई ॥  
जह महा भइआन दूत जम दलै ॥  
तह केवल नामु संगि तेरै चलै ॥  
जह मुसकल होवै अति भारी ॥  
हरि को नामु खिन माहि उधारी ॥  
अनिक पुनहचरन करत नही तरै ॥  
हरि को नामु कोटि पाप परहरै ॥  
गुरमुखि नामु जपहु मन मेरे ॥  
नानक पावहु सूख घनेरे  
॥१॥

सगल स्रिसटि को राजा दुखीआ ॥  
हरि का नामु जपत होइ सुखीआ ॥  
लाख करोरी बंधु न परै ॥  
हरि का नामु जपत निसतरै ॥  
अनिक माइआ रंग तिख न बुझावै ॥  
हरि का नामु जपत आघावै ॥  
जिह मारगि इहु जात इकेला ॥  
तह हरि नामु संगि होत सुहेला ॥  
ऐसा नामु मन सदा धिआईऐ ॥  
नानक गुरमुखि परम गति पाईऐ  
॥२॥

छूटत नही कोटि लख बाही ॥  
नामु जपत तह पारि पराही ॥  
अनिक बिघन जह आइ संघारै ॥  
हरि का नामु ततकाल उधारै ॥  
अनिक जोनि जनमै मरि जाम ॥  
नामु जपत पावै बिस्राम ॥  
हउ मैला मलु कबहु न धोवै ॥  
हरि का नामु कोटि पाप खोवै ॥  
ऐसा नामु जपहु मन रंगि ॥  
नानक पाईऐ साध कै संगि

॥३॥

जिह मारग के गने जाहि न कोसा ॥  
हरि का नामु ऊहा संगि तोसा ॥  
जिह पैडै महा अंध गुबारा ॥  
हरि का नामु संगि उजीआरा ॥  
जहा पंथि तेरा को न सिजानू ॥  
हरि का नामु तह नालि पछानू ॥  
जह महा भइआन तपति बहु घाम ॥  
तह हरि के नाम की तुम ऊपरि छाम ॥  
जहा त्रिखा मन तुझु आकरखै ॥  
तह नानक हरि हरि अम्रिंत बरखै  
॥४॥

भगत जना की बरतनि नामु ॥  
संत जना कै मनि बिस्रामु ॥  
हरि का नामु दास की ओट ॥  
हरि कै नामि उधरे जन कोटि ॥  
हरि जसु करत संत दिनु राति ॥  
हरि हरि अउखधु साध कमाति ॥  
हरि जन कै हरि नामु निधानु ॥  
पारब्रह्मि जन कीनो दान ॥  
मन तन रंगि रते रंग एकै ॥  
नानक जन कै बिरति बिबेकै

॥५॥

हरि का नामु जन कउ मुकति जुगति ॥  
हरि कै नामि जन कउ त्रिपति भुगति ॥

हरि का नामु जन का रूप रंगु ॥

हरि नामु जपत कब परै न भंगु ॥

हरि का नामु जन की वडिआई ॥

हरि कै नामि जन सोभा पाई ॥

हरि का नामु जन कउ भोग जोग ॥

हरि नामु जपत कछु नाहि बिओगु ॥

जनु राता हरि नाम की सेवा ॥

नानक पूजै हरि हरि देवा

॥६॥

हरि हरि जन कै मालु खजीना ॥  
हरि धनु जन कउ आपि प्रभि दीना ॥  
हरि हरि जन कै ओट सताणी ॥  
हरि प्रतापि जन अवर न जाणी ॥  
ओति पोति जन हरि रसि राते ॥  
सुंनि समाधि नाम रस माते ॥  
आठ पहर जनु हरि हरि जपै ॥  
हरि का भगतु प्रगट नही छपै ॥  
हरि की भगति मुकति बहु करे ॥  
नानक जन संगि केते तरे

॥७॥



पारजातु इहु हरि को नाम ॥  
कामधेन हरि हरि गुण गाम ॥  
सभ ते ऊतम हरि की कथा ॥  
नामु सुनत दरद दुख लथा ॥  
नाम की महिमा संत रिद वसै ॥  
संत प्रतापि दुरतु सभु नसै ॥  
संत का संगु वडभागी पाईऐ ॥  
संत की सेवा नामु धिआईऐ ॥  
नाम तुलि कछु अवरु न होइ ॥  
नानक गुरमुखि नामु पावै जनु कोइ  
॥८॥२॥